पहले इसे पढ़ें

बिशप*
GARLAND F. BYERS, JR., J.D., D.D.‡
जातियों के लिए बिशप, प्रेरितिक आदेश के अधीन

यदि आप बिशप के क्रमांकित सैद्धान्तिक वक्तव्य पढ़ने जा रहे हैं, तो आपसे आग्रहपूर्वक अनुशंसा की जाती है कि आप यह प्रार्थना करें, और भाग दो में दिए गए बाँधने के अंश को पढ़ें और उससे सहमति दें, ताकि आप बिना किसी बाधा और रुकावट के पढ़ सकें।

भाग एक: बाँधने की प्रार्थना

यह प्रार्थना दो भागों में से पहला भाग होने के लिये है, ताकि आत्मिक युद्ध के विषयों से संबंधित किसी प्रेरितिक लेख को पढ़ते समय पाठक को उचित आत्मिक मनोदशा और आत्मिक सुरक्षा मिले। यह बाँधने की प्रार्थना अपने बाद आनेवाली बाँधने की प्रेरितिक आज्ञा के साथ पढ़ी जाने के लिये है। यह प्रार्थना परमेश्वर से माँगती है कि वे स्वयं अपनी ओर से इस बाँधने को प्रभावी करें, और फिर बिशप बाँधने की एक प्रेरितिक आज्ञा देते हैं, जिसे लागू करने के लिये परमेश्वर से यीशु मसीह के नाम में विनती की जाती है।[1]

हे सर्वशक्तिमान[2] और परमप्रधान परमेश्वर,[3] हमारे पिता, जो स्वर्ग में हैं,[4] स्वर्ग और पृथ्वी के सृजनहार,[5] हम[6] प्रार्थना में[7] आपके पास आते हैं, उस नाम में[8] जो आपके एकलौते पुत्र,[9] यीशु[10] का नाम है, जो परमेश्वर और मनुष्यों के बीच एक ही बिचवई हैं।[11] हे पिता, ये लेख आपके वचन की प्रेरितिक शिक्षाएँ हैं[12] और इनका उद्देश्य आपकी और आपके पुत्र यीशु मसीह की महिमा करना है।[13] हम जानते हैं कि शत्रु[14] वचन बोए जाते ही आ जाता है[15] और उसे हृदय से छीन ले जाता है, ऐसा न हो कि मनुष्य विश्वास करके उद्धार पाएँ।[16] मसीह के लौट आने तक शैतान इस संसार का ईश्वर है,[17] और वह मनुष्यों की बुद्धि को अंधा कर देता है,[18] सुनने की शक्ति को मन्द कर देता है,[19] गड़बड़ी उत्पन्न करता है,[20] और विश्वासी से वह भुलवा देता है जो उसे सिखाया गया था।[21]

इसलिए, हे पिता, हम निम्नलिखित बातें माँगते हैं[22] उन सब के लिये जो इन प्रेरितिक लेखों को पढ़ते हैं:[23]

हम माँगते हैं कि पवित्र आत्मा उन्हें सामर्थ्य दें[24] कि वे इन शिक्षाओं को समझ[25] और विवेक के साथ पढ़ें,[26] कि वे मसीह के मन से पढ़ें[27] और शारीरिक, पतित मन से नहीं।[28]

हम माँगते हैं कि पवित्र आत्मा, जिन्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह ने भेजा[29] जब वे ऊपर उठाए जाकर आपकी दाहिनी ओर गए,[30] उन्हें आत्मिक आँखों से पढ़ने दें[31] और उन्हें सब बातें स्मरण कराएँ।[32]

हम माँगते हैं कि शिक्षा ग्रहण करने के लिये उनके हृदय खोले जाएँ,[33] और उनका सारे सत्य में मार्गदर्शन हो,[34] और इन शिक्षाओं को पढ़ने के द्वारा आप उन्हें अपने और भी निकट खींच लें,[35] और वे आपके सत्य के द्वारा पवित्र किए जाएँ।[36]

हम माँगते हैं कि आप उस दुष्ट को,[37] झूठ के पिता को,[38] मानवजाति के उस शत्रु को[39] बाँध दें, जो आपसे और हमसे बैर रखता है,[40] हमसे, जो आपके स्वरूप में रचे गए हैं।[41] हम माँगते हैं कि आप उसे बाँध दें, ताकि वह समझ को रोक न सके,[42] सत्य सुनने पर भावनाओं को बुरी रीति से भड़का न सके,[43] उनके कान बन्द और उनके हृदय कठोर न कर सके,[44] और उनसे ये शिक्षाएँ भुलवा न सके,[45] जिससे ये शिक्षाएँ उनमें निष्फल हो जाएँ,[46] इस आत्मिक युद्ध में, जिसमें हम अभी लगे हुए हैं।[47]

हम प्रार्थना करते हैं कि आप उन्हें आशीष दें जो इन शिक्षाओं को पढ़ते हैं,[48] उन्हें और उनके घराने को आशीष दें,[49] और शत्रु को बाँध दें, ताकि वह उनसे बदला न ले सके[50] इस कारण कि वे आपके दर्शन के खोजी हुए।[51] हम उन पर,[52] इन शिक्षाओं पर, और उनके सम्पूर्ण आत्मिक घर पर यीशु के लहू के लिये प्रार्थना करते हैं।[53] हे प्रभु, अपनी सामर्थ्य प्रगट कीजिए,[54] और अपने अभिषिक्तों की रक्षा कीजिए।[55]

हम माँगते हैं कि ये शिक्षाएँ पढ़नेवालों को सुसज्जित करें[56] कि वे ऐसा धार्मिक जीवन बिताएँ जो आपको ग्रहणयोग्य हो,[57] और कि वे अधिक से अधिक मसीह के समान बढ़ते जाएँ,[58] हर बीतते दिन के साथ।[59]

और अन्त में, हे पिता, हम माँगते हैं कि आप उस आत्मिक बाँधने को प्रभावी करें[60] जिसे आपका दास अब इन लेखों पर रखेगा,[61] कि शत्रु भगा दिया जाए,[62] और कि शत्रु भय से थरथराए,[63] यदि वे आपकी सुरक्षा के बाड़े का उल्लंघन करें।[64]

हे पिता, हम आपका धन्यवाद और स्तुति करते हैं,[65] कि आपने इस आत्मिक युद्ध में हमें असहाय नहीं छोड़ा।[66] आपने हमें अपना वचन दिया है, जो आत्मा की तलवार है[67] और हर एक दोधारी तलवार से भी तेज है।[68] आपने अपने एकलौते पुत्र, हमारे प्रभु यीशु मसीह को दे दिया, ताकि हम अनन्त जीवन पाएँ[69] और ताकि हम पराजय के नहीं, बल्कि विजय के स्थान से लड़ें,[70] क्योंकि मसीह ने उन प्रधानताओं और अधिकारों पर जय पाई और उनका तमाशा बनाया,[71] जिन्हें इस संसार के ईश्वर ने ऊँचे स्थानों में बैठाया है।[72] उनके लहू के द्वारा हम चंगे किए गए हैं,[73] आपके साथ हमारा मेल कराया गया है,[74] और हमें विजय का और अनन्त जीवन का मुकुट दिया गया है।[75] आपने अपना पवित्र आत्मा भेजा है कि वे हमें सारे सत्य का मार्ग बताएँ,[76] और आपने हमें पृथ्वी पर मसीह की देह, अर्थात कलीसिया, दी है,[77] जिसके विषय में मसीह ने कहा, "...अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।"[78]

और हे पिता, हम आपका धन्यवाद करते हैं कि आपने हमारी सुन ली है,[79] और विश्वास से हम जानते हैं कि आप हमें आशीष देंगे और हमारी प्रार्थना का उत्तर देंगे।[80]

ये सब बातें हम उस नाम में[81] माँगते हैं, जो हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह का नाम है।[82] आमीन।[83]

> **कृपया ध्यान दें:** बाँधने की प्रार्थना, अकेले, निष्प्रभावी हो सकती है। जैसा स्वयं प्रार्थना संकेत करती है, शैतान और उसकी धर्मत्यागी सेना कभी-कभी उन लोगों पर टूट पड़ती है और उनसे बदला लेती है जो परमेश्वर का वचन पढ़ते हैं। बिशप इसे एक अत्यन्त गम्भीर विषय मानते हैं, जिसके लिये यथासम्भव पूरी सुरक्षा आवश्यक है। इसलिए पाठक को प्रोत्साहित किया जाता है कि वह बाँधने की प्रेरितिक आज्ञा को भी पढ़े, और प्रार्थनापूर्वक पढ़े।

अब पाठक को आदरपूर्वक और प्रार्थनापूर्वक बाँधने की प्रेरितिक आज्ञा की ओर निर्देशित किया जाता है, ताकि इस वेबसाइट पर दिए गए प्रेरितिक लेखों को पढ़ने में उसे पूरी सुरक्षा मिले।

✠

भाग दो: बाँधने की प्रेरितिक आज्ञा

बाँधने की प्रेरितिक आज्ञा तैयार की जा रही है और यहीं प्रकाशित की जाएगी। इसे बाँधने की प्रार्थना के साथ, इस वेबसाइट के प्रेरितिक लेखों को पढ़ने से पहले, पढ़ा जाना है।

अंतिम संशोधन: 19 अक्टूबर 2026

✠

टिप्पणियाँ

1 मेरे लिये यह एक बड़ा रहस्य है कि लगभग दो हज़ार वर्षों से कलीसिया जानती आई है कि शैतान और उसकी धर्मत्यागी सेना विभिन्न रीतियों से परमेश्वर के लोगों से परमेश्वर का वचन चुरा लेती है, इस उद्देश्य से कि वे सत्य से अनजान बने रहें। "...मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता।" यूहन्ना 14:6 (IRV)। फिर भी, जहाँ तक मुझे ज्ञात है, न तो कलीसिया का कोई लेख और न किसी मसीही लेखक का कोई लेख किसी बाँधने की प्रार्थना से, या बिशप या प्रेरित का पद धारण करनेवाले किसी अधिकारी की बाँधने की आज्ञा से आरम्भ होता है। उस स्वीकृत आत्मिक युद्ध को देखते हुए, जिसमें कलीसिया और मसीह की देह के सदस्य अब लगे हुए हैं, मुझे यह उचित और विवेकपूर्ण लगता है कि मसीही विश्वास के विषयों से संबंधित सब लेखों में ऐसी एक बाँधने की प्रार्थना सम्मिलित की जाए।

2 "...यहोवा ने उसको दर्शन देकर कहा, "मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ; मेरी उपस्थिति में चल और सिद्ध होता जा।" उत्पत्ति 17:1 (IRV); "... और वे रात-दिन बिना विश्राम लिए यह कहते रहते हैं, "पवित्र, पवित्र, पवित्र प्रभु परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, जो था, और जो है, और जो आनेवाला है।"" प्रकाशितवाक्य 4:8 (IRV)।

3 "तब शालेम का राजा मलिकिसिदक, जो परमप्रधान परमेश्वर का याजक था, रोटी और दाखमधु ले आया। और उसने अब्राम को यह आशीर्वाद दिया, "परमप्रधान परमेश्वर की ओर से, जो आकाश और पृथ्वी का अधिकारी है, तू धन्य हो।" उत्पत्ति 14:18–19 (IRV); "मैं परमप्रधान परमेश्वर को पुकारूँगा, परमेश्वर को जो मेरे लिये सब कुछ सिद्ध करता है।" भजन संहिता 57:2 (IRV)।

4 “अतः तुम इस रीति से प्रार्थना किया करो: ‘हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है; तेरा नाम पवित्र माना जाए।” मत्ती 6:9 (IRV)।

5 “आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।” उत्पत्ति 1:1 (IRV); “...यहोवा जो सनातन परमेश्वर और पृथ्वी भर का सृजनहार है, वह न थकता, न श्रमित होता है...” यशायाह 40:28 (IRV); “मुझे सहायता यहोवा की ओर से मिलती है, जो आकाश और पृथ्वी का कर्ता है।” भजन संहिता 121:2 (IRV); “...हे प्रभु, तू वही है जिसने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ उनमें है बनाया।” प्रेरितों के काम 4:24 (IRV)।

6 यहाँ “हम” का अर्थ पाठक भी है और लेखक बिशप भी।

7 “इसलिए आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट साहस बाँधकर चलें, कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएँ, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे।” इब्रानियों 4:16 (IRV)।

8 “...यदि पिता से कुछ माँगोगे, तो वह मेरे नाम से तुम्हें देगा।” यूहन्ना 16:23 (IRV); “और जो कुछ तुम मेरे नाम से माँगोगे, वही मैं करूँगा कि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो।” यूहन्ना 14:13 (IRV)।

9 “क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।” यूहन्ना 3:16 (IRV); “...एकलौता पुत्र जो पिता की गोद में हैं, उसी ने उसे प्रगट किया।” यूहन्ना 1:18 (IRV); “... परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है कि हम उसके द्वारा जीवन पाएँ।” 1 यूहन्ना 4:9 (IRV)।

10 “...तू उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा।” मत्ती 1:21 (IRV)।

11 “क्योंकि परमेश्वर एक ही है, और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात् मसीह यीशु जो मनुष्य है...” 1 तीमुथियुस 2:5 (IRV); “...मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता।” यूहन्ना 14:6 (IRV); “...वह और भी उत्तम वाचा का मध्यस्थ ठहरा, जो और उत्तम प्रतिज्ञाओं के सहारे बाँधी गई है।” इब्रानियों 8:6 (IRV); शब्द “परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में” 1 तीमुथियुस 2:5 (IRV) में मूल यूनानी से अनूदित जैसे अंकित हैं, वैसे ही रखे गए हैं, ताकि पवित्रशास्त्र अक्षुण्ण रूप से उद्धृत हो। यूनानी शब्द anthrōpos (Strong’s G444) है, जो लिंग का भेद किए बिना मनुष्य मात्र को सूचित करता है, और anēr (G435) से भिन्न है, जिसका अर्थ पुरुष के रूप में मनुष्य है। इसलिए यह पद स्त्रियों और पुरुषों दोनों को समान रूप से सम्मिलित करता है, क्योंकि मसीह में “...न कोई नर, न नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो।” गलातियों 3:28 (IRV)।

12 “और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।” प्रेरितों के काम 2:42 (IRV); “इसलिए, हे भाइयों, स्थिर रहो; और जो शिक्षा तुम ने हमारे वचन या पत्र के द्वारा प्राप्त किया है, उन्हें थामे रहो।” 2 थिस्सलुनीकियों 2:15 (IRV); “और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर जिसके कोने का पत्थर मसीह यीशु आप ही है, बनाए गए हो।” इफिसियों 2:20 (IRV); “कि तू वचन का प्रचार कर; समय और असमय तैयार रह, सब प्रकार की सहनशीलता, और शिक्षा के साथ उलाहना दे, और डाँट, और समझा।” 2 तीमुथियुस 4:2 (IRV)।

13 “यदि कोई बोले, तो ऐसा बोले मानो परमेश्वर का वचन है ... जिससे सब बातों में यीशु मसीह के द्वारा, परमेश्वर की महिमा प्रगट हो। महिमा और सामर्थ्य युगानुयुग उसी की है। आमीन।” 1 पतरस 4:11 (IRV); “...हे पिता, वह घड़ी आ पहुँची, अपने पुत्र की महिमा कर, कि पुत्र भी तेरी महिमा करे...” यूहन्ना 17:1 (IRV); “इसलिए कि सब लोग जैसे पिता का आदर करते हैं वैसे ही पुत्र का भी आदर करें...” यूहन्ना 5:23 (IRV); “...चाहे जो कुछ करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिये करो।” 1 कुरिन्थियों 10:31 (IRV)।

14 “सचेत हो, और जागते रहो, क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह के समान इस खोज में रहता है, कि किसको फाड़ खाए।” 1 पतरस 5:8 (IRV)।

15 "...जहाँ वचन बोया जाता है, ये वे हैं, कि जब उन्होंने सुना, तो शैतान तुरन्त आकर वचन को जो उनमें बोया गया था, उठा ले जाता है।" मरकुस 4:15 (IRV); "...उसके मन में जो कुछ बोया गया था, उसे वह दुष्ट आकर छीन ले जाता है..." मत्ती 13:19 (IRV)।

16 "मार्ग के किनारे के वे हैं, जिन्होंने सुना; तब शैतान आकर उनके मन में से वचन उठा ले जाता है, कि कहीं ऐसा न हो कि वे विश्वास करके उद्धार पाएँ।" लूका 8:12 (IRV)।

17 "...अब इस जगत का सरदार निकाल दिया जाएगा।" यूहन्ना 12:31 (IRV); "...आकाश के अधिकार के अधिपति अर्थात् उस आत्मा के अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न माननेवालों में कार्य करता है।" इफिसियों 2:2 (IRV); "...उन अविश्वासियों के लिये, जिनकी बुद्धि इस संसार के ईश्वर ने अंधी कर दी है..." 2 कुरिन्थियों 4:4 (IRV); "और उनका भरमानेवाला शैतान आग और गन्धक की उस झील में, जिसमें वह पशु और झूठा भविष्यद्वक्ता भी होगा, डाल दिया जाएगा; और वे रात-दिन युगानुयुग पीड़ा में तड़पते रहेंगे।" प्रकाशितवाक्य 20:10 (IRV)।

18 "और उन अविश्वासियों के लिये, जिनकी बुद्धि इस संसार के ईश्वर ने अंधी कर दी है, ताकि मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है, उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके।" 2 कुरिन्थियों 4:4 (IRV)।

19 "...हे गूँगी और बहरी आत्मा, मैं तुझे आज्ञा देता हूँ, उसमें से निकल आ, और उसमें फिर कभी प्रवेश न करना।" मरकुस 9:25 (IRV); "जो कोई राज्य का वचन सुनकर नहीं समझता, उसके मन में जो कुछ बोया गया था, उसे वह दुष्ट आकर छीन ले जाता है; यह वही है, जो मार्ग के किनारे बोया गया था।" मत्ती 13:19 (IRV)।

20 "क्योंकि परमेश्वर गड़बड़ी का नहीं, परन्तु शान्ति का कर्ता है; जैसा पवित्र लोगों की सब कलीसियाओं में है।" 1 कुरिन्थियों 14:33 (IRV); "यह ज्ञान वह नहीं, जो ऊपर से उतरता है वरन् सांसारिक, और शारीरिक, और शैतानी है। इसलिए कि जहाँ ईर्ष्या और विरोध होता है, वहाँ बखेड़ा और हर प्रकार का दुष्कर्म भी होता है।" याकूब 3:15–16 (IRV); "परन्तु मैं डरता हूँ कि जैसे साँप ने अपनी चतुराई से हव्वा को बहकाया, वैसे ही तुम्हारे मन उस सिधाई और पवित्रता से जो मसीह के साथ होनी चाहिए कहीं भ्रष्ट न किए जाएँ।" 2 कुरिन्थियों 11:3 (IRV)।

21 "इस कारण चाहिए, कि हम उन बातों पर जो हमने सुनी हैं अधिक ध्यान दें, ऐसा न हो कि बहक कर उनसे दूर चले जाएँ।" इब्रानियों 2:1 (IRV); "इसलिए यद्यपि तुम ये बातें जानते हो, और जो सत्य वचन तुम्हें मिला है, उसमें बने रहते हो, तो भी मैं तुम्हें इन बातों की सुधि दिलाने को सर्वदा तैयार रहूँगा।" 2 पतरस 1:12 (IRV); "जो मार्ग के किनारे के हैं जहाँ वचन बोया जाता है, ये वे हैं, कि जब उन्होंने सुना, तो शैतान तुरन्त आकर वचन को जो उनमें बोया गया था, उठा ले जाता है।" मरकुस 4:15 (IRV)।

22 "किसी भी बात की चिन्ता मत करो; परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएँ।" फिलिप्पियों 4:6 (IRV); "माँगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूँढ़ो, तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिये खोला जाएगा।" मत्ती 7:7 (IRV)।

23 "इसलिए जिस दिन से यह सुना है, हम भी तुम्हारे लिये यह प्रार्थना करने और विनती करने से नहीं चूकते कि तुम सारे आत्मिक ज्ञान और समझ सहित परमेश्वर की इच्छा की पहचान में परिपूर्ण हो जाओ..." कुलुस्सियों 1:9 (IRV); "तुम्हारे लिये परमेश्वर का धन्यवाद करना नहीं छोड़ता, और अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें स्मरण किया करता हूँ। कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर जो महिमा का पिता है, तुम्हें बुद्धि की आत्मा और अपने ज्ञान का प्रकाश दे।" इफिसियों 1:16–17 (IRV)।

24 "परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे..." प्रेरितों के काम 1:8 (IRV); "कि वह अपनी महिमा के धन के अनुसार तुम्हें यह दान दे कि तुम उसके आत्मा से अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ्य पाकर बलवन्त होते जाओ..." इफिसियों 3:16 (IRV)।

25 "जो मैं कहता हूँ, उस पर ध्यान दे और प्रभु तुझे सब बातों की समझ देगा।" 2 तीमुथियुस 2:7 (IRV); "तब उसने पवित्रशास्त्र समझने के लिये उनकी समझ खोल दी।" लूका 24:45 (IRV)।

26 “ये लोग तो थिस्सलुनीके के यहूदियों से भले थे और उन्होंने बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया, और प्रतिदिन पवित्रशास्त्रों में ढूँढ़ते रहे कि ये बातें ऐसी ही हैं कि नहीं।” प्रेरितों के काम 17:11 (IRV); “सब बातों को परखो जो अच्छी है उसे पकड़े रहो।” 1 थिस्सलुनीकियों 5:21 (IRV); “...जिनकी ज्ञानेन्द्रियाँ अभ्यास करते-करते, भले बुरे में भेद करने में निपुण हो गई हैं।” इब्रानियों 5:14 (IRV); “और मैं यह प्रार्थना करता हूँ, कि तुम्हारा प्रेम, ज्ञान और सब प्रकार के विवेक सहित और भी बढ़ता जाए, यहाँ तक कि तुम उत्तम से उत्तम बातों को प्रिय जानो...” फिलिप्पियों 1:9–10 (IRV)।

27 ““क्योंकि प्रभु का मन किसने जाना है, कि उसे सिखाए?” परन्तु हम में मसीह का मन है।” 1 कुरिन्थियों 2:16 (IRV); “जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो...” फिलिप्पियों 2:5 (IRV)।

28 “शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है। क्योंकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योंकि न तो परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन है, और न हो सकता है।” रोमियों 8:6–7 (IRV); “परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उसकी दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उनकी जाँच आत्मिक रीति से होती है।” 1 कुरिन्थियों 2:14 (IRV); “...जैसे अन्यजातीय लोग अपने मन की अनर्थ की रीति पर चलते हैं, तुम अब से फिर ऐसे न चलो। क्योंकि उनकी बुद्धि अंधेरी हो गई है और उस अज्ञानता के कारण जो उनमें है और उनके मन की कठोरता के कारण वे परमेश्वर के जीवन से अलग किए हुए हैं...” इफिसियों 4:17–18 (IRV); “इसलिए जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई...” रोमियों 5:12 (IRV)।

29 “फिर भी मैं तुम से सच कहता हूँ, कि मेरा जाना तुम्हारे लिये अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊँ, तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा, परन्तु यदि मैं जाऊँगा, तो उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा।” यूहन्ना 16:7 (IRV); “परन्तु जब वह सहायक आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूँगा, अर्थात् सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है, तो वह मेरी गवाही देगा।” यूहन्ना 15:26 (IRV)।

30 “इस प्रकार परमेश्वर के दाहिने हाथ से सर्वोच्च पद पाकर, और पिता से वह पवित्र आत्मा प्राप्त करके जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी, उसने यह उण्डेल दिया है जो तुम देखते और सुनते हो।” प्रेरितों के काम 2:33 (IRV); “तब प्रभु यीशु उनसे बातें करने के बाद स्वर्ग पर उठा लिया गया, और परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठ गया।” मरकुस 16:19 (IRV)।

31 “और तुम्हारे मन की आँखें ज्योतिर्मय हों कि तुम जान लो कि हमारे बुलाहट की आशा क्या है...” इफिसियों 1:18 (IRV); “मेरी आँखें खोल दे, कि मैं तेरी व्यवस्था की अद्भुत बातें देख सकूँ।” भजन संहिता 119:18 (IRV); “तब एलीशा ने यह प्रार्थना की, “हे यहोवा, इसकी आँखें खोल दे कि यह देख सके...” 2 राजाओं 6:17 (IRV)।

32 “परन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैंने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा।” यूहन्ना 14:26 (IRV)।

33 “...लुदिया ... प्रभु ने उसका मन खोला, ताकि पौलुस की बातों पर ध्यान लगाए।” प्रेरितों के काम 16:14 (IRV); “अपना हृदय शिक्षा की ओर, और अपने कान ज्ञान की बातों की ओर लगाना।” नीतिवचन 23:12 (IRV); “...उस वचन को नम्रता से ग्रहण कर लो, जो हृदय में बोया गया और जो तुम्हारे प्राणों का उद्धार कर सकता है।” याकूब 1:21 (IRV)।

34 “परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा...” यूहन्ना 16:13 (IRV)।

35 “कोई मेरे पास नहीं आ सकता, जब तक पिता, जिसने मुझे भेजा है, उसे खींच न ले...” यूहन्ना 6:44 (IRV); “...मैं तुझ से सदा प्रेम रखता आया हूँ; इस कारण मैंने तुझ पर अपनी करुणा बनाए रखी है।” यिर्मयाह 31:3 (IRV); “परमेश्वर के निकट आओ, तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा...” याकूब 4:8 (IRV); “अपने पुरखाओं के दिनों से तुम लोग मेरी विधियों से हटते आए हो, और उनका पालन नहीं करते। तुम मेरी ओर फिरो, तब मैं भी तुम्हारी ओर फिरूँगा,” सेनाओं के यहोवा का यही वचन है...” मलाकी 3:7 (IRV); “इसलिए तू इन लोगों से कह,

सेनाओं का यहोवा यह कहता है: तुम मेरी ओर फिरो, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है, तब मैं तुम्हारी ओर फिरूँगा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।" जकर्याह 1:3 (IRV)।

36 "सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर: तेरा वचन सत्य है।" यूहन्ना 17:17 (IRV); "...परमेश्वर ने आदि से तुम्हें चुन लिया; कि आत्मा के द्वारा पवित्र बनकर, और सत्य पर विश्वास करके उद्धार पाओ।" 2 थिस्सलुनीकियों 2:13 (IRV)।

37 "मैं यह विनती नहीं करता, कि तू उन्हें जगत से उठा ले, परन्तु यह कि तू उन्हें उस दुष्ट से बचाए रख।" यूहन्ना 17:15 (IRV); "फिर मैंने एक स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा; जिसके हाथ में अथाह कुण्ड की कुँजी, और एक बड़ी जंजीर थी। और उसने उस अजगर, अर्थात् पुराने साँप को, जो शैतान है; पकड़कर हजार वर्ष के लिये बाँध दिया..." प्रकाशितवाक्य 20:1–2 (IRV); "...कैसे कोई मनुष्य किसी बलवन्त के घर में घुसकर उसका माल लूट सकता है जब तक कि पहले उस बलवन्त को न बाँध ले?" मत्ती 12:29 (IRV); "परन्तु प्रभु विश्वासयोग्य है; वह तुम्हें दृढ़ता से स्थिर करेगा: और उस दुष्ट से सुरक्षित रखेगा।" 2 थिस्सलुनीकियों 3:3 (IRV)।

38 "तुम अपने पिता शैतान से हो, और अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो। वह तो आरम्भ से हत्यारा है, और सत्य पर स्थिर न रहा, क्योंकि सत्य उसमें है ही नहीं; जब वह झूठ बोलता, तो अपने स्वभाव ही से बोलता है; क्योंकि वह झूठा है, वरन् झूठ का पिता है।" यूहन्ना 8:44 (IRV)।

39 "जिस शत्रु ने उनको बोया वह शैतान है..." मत्ती 13:39 (IRV); "...तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह के समान इस खोज में रहता है, कि किसको फाड़ खाए।" 1 पतरस 5:8 (IRV); "मैंने तुम्हें साँपों और बिच्छुओं को रौंदने का, और शत्रु की सारी सामर्थ्य पर अधिकार दिया है..." लूका 10:19 (IRV)।

40 "...हे पृथ्वी, और समुद्र, तुम पर हाय! क्योंकि शैतान बड़े क्रोध के साथ तुम्हारे पास उतर आया है; क्योंकि जानता है कि उसका थोड़ा ही समय और बाकी है।" प्रकाशितवाक्य 12:12 (IRV); "तब अजगर स्त्री पर क्रोधित हुआ, और उसकी शेष सन्तान से जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते, और यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं, लड़ने को गया।" प्रकाशितवाक्य 12:17 (IRV); "...वह तो आरम्भ से हत्यारा है..." यूहन्ना 8:44 (IRV)।

41 "तब परमेश्वर ने अपने स्वरूप में मनुष्य को रचा, अपने ही स्वरूप में परमेश्वर ने मनुष्य की रचना की; नर और नारी के रूप में उसने मनुष्यों की सृष्टि की।" उत्पत्ति 1:27 (IRV); "For God created man to be immortal, and made him to be an image of his own eternity. Nevertheless through envy of the devil came death into the world . . ." सुलैमान की बुद्धि 2:23–24 (KJV) (यह पुस्तक IRV में नहीं है)।

42 "जो कोई राज्य का वचन सुनकर नहीं समझता, उसके मन में जो कुछ बोया गया था, उसे वह दुष्ट आकर छीन ले जाता है; यह वही है, जो मार्ग के किनारे बोया गया था।" मत्ती 13:19 (IRV); "...उन अविश्वासियों के लिये, जिनकी बुद्धि इस संसार के ईश्वर ने अंधी कर दी है..." 2 कुरिन्थियों 4:4 (IRV)।

43 "क्रोध तो करो, पर पाप मत करो; सूर्य अस्त होने तक तुम्हारा क्रोध न रहे। और न शैतान को अवसर दो।" इफिसियों 4:26–27 (IRV); "ये बातें सुनकर वे क्रोधित हुए और उस पर दाँत पीसने लगे।" (स्तिफनुस के उपदेश के उत्तर में) प्रेरितों के काम 7:54 (IRV); "तो क्या तुम से सच बोलने के कारण मैं तुम्हारा बैरी हो गया हूँ।" गलातियों 4:16 (IRV); "...हर एक मनुष्य सुनने के लिये तत्पर और बोलने में धीर और क्रोध में धीमा हो। क्योंकि मनुष्य का क्रोध परमेश्वर के धार्मिकता का निर्वाह नहीं कर सकता है।" याकूब 1:19–20 (IRV)।

44 "क्योंकि इन लोगों के मन सुस्त हो गए है, और वे कानों से ऊँचा सुनते हैं और उन्होंने अपनी आँखें मूँद लीं हैं..." मत्ती 13:15 (IRV); "वरन् जिस दिन तक आज का दिन कहा जाता है, हर दिन एक दूसरे को समझाते रहो, ऐसा न हो, कि तुम में से कोई जन पाप के छल में आकर कठोर हो जाए।" इब्रानियों 3:13 (IRV); "हे हठीले, और मन और कान के खतनारहित लोगों, तुम सदा पवित्र आत्मा का विरोध करते हो..." प्रेरितों के काम 7:51 (IRV)।

45 "...जब उन्होंने सुना, तो शैतान तुरन्त आकर वचन को जो उनमें बोया गया था, उठा ले जाता है।" मरकुस 4:15 (IRV); "...वह अपने काम में इसलिए आशीष पाएगा कि सुनकर भूलता नहीं, पर वैसा ही काम करता है।" याकूब 1:25 (IRV); "...ऐसा न हो कि बहक कर उनसे दूर चले जाएँ।" इब्रानियों 2:1 (IRV)।

46 "...इस संसार की चिन्ता और धन का धोखा वचन को दबाता है, और वह फल नहीं लाता।" मत्ती 13:22 (IRV); "इस प्रकार तुम अपनी परम्पराओं से, जिन्हें तुम ने ठहराया है, परमेश्वर का वचन टाल देते हो..." मरकुस 7:13 (IRV)।

47 "क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लहू और माँस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से, और इस संसार के अंधकार के शासकों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं।" इफिसियों 6:12 (IRV); "क्योंकि यद्यपि हम शरीर में चलते फिरते हैं, तो भी शरीर के अनुसार नहीं लड़ते। क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं, पर गढ़ों को ढा देने के लिये परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं। हम कल्पनाओं को, ... खण्डन करते हैं; और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं।" 2 कुरिन्थियों 10:3–5 (IRV); "और उद्धार का टोप, और आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का वचन है, ले लो।" इफिसियों 6:17 (IRV)।

48 "धन्य है वह जो इस भविष्यद्वाणी के वचन को पढ़ता है, और वे जो सुनते हैं और इसमें लिखी हुई बातों को मानते हैं..." प्रकाशितवाक्य 1:3 (IRV); "यहोवा तुझे आशीष दे और तेरी रक्षा करे: "यहोवा तुझ पर अपने मुख का प्रकाश चमकाए, और तुझ पर अनुग्रह करे: "यहोवा अपना मुख तेरी ओर करे, और तुझे शान्ति दे।" गिनती 6:24–26 (IRV)।

49 "तो अब प्रसन्न होकर अपने दास के घराने पर ऐसी आशीष दे, कि वह तेरे सम्मुख सदैव बना रहे..." 2 शमूएल 7:29 (IRV) (दाऊद, अपने आत्मिक घराने पर आशीष के लिये प्रार्थना करते हुए; यह इस प्रार्थना का एक प्रत्यक्ष आदर्श है); "...प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा।" प्रेरितों के काम 16:31 (IRV)।

50 "क्या तूने उसकी, और उसके घर की, और जो कुछ उसका है उसके चारों ओर बाड़ा नहीं बाँधा?..." अय्यूब 1:10 (IRV) (शैतान के अंकित शब्द, जो प्रमाणित करते हैं कि परमेश्वर की सुरक्षा धर्मियों और उनके घर के चारों ओर बाड़े के समान काम करती है [जिसकी पुष्टि अय्यूब की पुस्तक के विस्तृत अध्ययन से होती है, और जो यहाँ के उद्धरण के दायरे से बाहर है]। जिन मसीही विश्वासियों के बीच मैंने सेवा की है, उनके साथ काम करते हुए मैंने इसे "बाड़े की प्रार्थना" कहा है।); "शमौन, हे शमौन, शैतान ने तुम लोगों को माँग लिया है कि गेहूँ के समान फटके। परन्तु मैंने तेरे लिये विनती की, कि तेरा विश्वास जाता न रहे..." लूका 22:31–32 (IRV); "...इसके बाद जब वचन के कारण उन पर क्लेश या उपद्रव होता है, तो वे तुरन्त ठोकर खाते हैं।" मरकुस 4:17 (IRV) (यह पद दर्शाता है कि शैतान और उसकी धर्मत्यागी सेना परमेश्वर के वचन के सुननेवाले या पढ़नेवाले से बदला ले सकती है और कभी-कभी लेती भी है, इसलिए कि वचन ग्रहण किया गया। यह प्रार्थना परमेश्वर से माँगती है कि वे इस शिक्षा में ऐसा न होने दें); "इसलिए कोई विपत्ति तुझ पर न पड़ेगी, न कोई दुःख तेरे डेरे के निकट आएगा।" भजन संहिता 91:10 (IRV) (... उस बाड़े के कारण, जो प्रार्थना में माँगा गया, जिसे परमेश्वर ने सुना, और जिसका उत्तर दिया)।

51 "तूने कहा है, "मेरे दर्शन के खोजी हो।" इसलिए मेरा मन तुझ से कहता है, "हे यहोवा, तेरे दर्शन का मैं खोजी रहूँगा।"" भजन संहिता 27:8 (IRV) (परमेश्वर की ओर से हमें यह प्रत्यक्ष आज्ञा कि हम उनके दर्शन के खोजी हों, जिसे यहाँ स्वीकार किया गया है); "तब यदि मेरी प्रजा के लोग जो मेरे कहलाते हैं, दीन होकर प्रार्थना करें और मेरे दर्शन के खोजी होकर अपनी बुरी चाल से फिरें, तो मैं स्वर्ग में से सुनकर..." 2 इतिहास 7:14 (IRV)।

52 "और जिन घरों में तुम रहोगे उन पर वह लहू तुम्हारे निमित्त चिन्ह ठहरेगा; अर्थात् मैं उस लहू को देखकर तुम को छोड़ जाऊँगा, और जब मैं मिस्र देश के लोगों को मारूँगा, तब वह विपत्ति तुम पर न पड़ेगी और तुम नाश न होंगे।" निर्गमन 12:13 (IRV); "...क्योंकि हमारा भी फसह जो मसीह है, बलिदान हुआ है।" 1 कुरिन्थियों 5:7 (IRV); "और वे मेम्ने के लहू के कारण, और अपनी गवाही के वचन के कारण, उस पर जयवन्त हुए..." प्रकाशितवाक्य 12:11 (IRV); "...पवित्र आत्मा के पवित्र करने के द्वारा आज्ञा मानने, और यीशु मसीह के लहू के छिड़के जाने के लिये..." 1 पतरस 1:2 (IRV)।

53 “तुम भी आप जीविते पत्थरों के समान आत्मिक घर बनते जाते हो, जिससे याजकों का पवित्र समाज बनकर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्रहणयोग्य हो।” 1 पतरस 2:5 (IRV); “और इसी रीति से उसने तम्बू और सेवा के सारे सामान पर लहू छिड़का। और व्यवस्था के अनुसार प्रायः सब वस्तुएँ लहू के द्वारा शुद्ध की जाती हैं...” इब्रानियों 9:21–22 (IRV) (यहाँ लहू सेवा में प्रयोग की जानेवाली वस्तुओं पर छिड़का जाता है, और निश्चय ही वचन की शिक्षा देना एक प्रमुख साधन है)।

54 “परमेश्वर उठे, उसके शत्रु तितर-बितर हों; और उसके बैरी उसके सामने से भाग जाएँ!” भजन संहिता 68:1 (IRV); “हे यहोवा की भुजा, जाग! जाग और बल धारण कर; जैसे प्राचीनकाल में और बीते हुए पीढ़ियों में, वैसे ही अब भी जाग...” यशायाह 51:9 (IRV); “हे यहोवा, अपनी सामर्थ्य में महान हो; और हम गा गाकर तेरे पराक्रम का भजन सुनाएँगे।” भजन संहिता 21:13 (IRV); “और उसकी सामर्थ्य हमारी ओर जो विश्वास करते हैं, कितनी महान है, उसकी शक्ति के प्रभाव के उस कार्य के अनुसार।” इफिसियों 1:19 (IRV)।

55 “हे परमेश्वर, हे हमारी ढाल, दृष्टि कर; और अपने अभिषिक्त का मुख देख!” भजन संहिता 84:9 (IRV); “मेरे अभिषिक्तों को मत छूओ, और न मेरे नबियों की हानि करो!” भजन संहिता 105:15 (IRV); “यहोवा अपने लोगों की सामर्थ्य है, वह अपने अभिषिक्त के लिये उद्धार का दृढ़ गढ़ है।” भजन संहिता 28:8 (IRV); “और तुम्हारा तो उस पवित्र से अभिषेक हुआ है, और तुम सब सत्य जानते हो।” 1 यूहन्ना 2:20 (IRV) (सब विश्वासी अभिषिक्त हैं)।

56 “सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धार्मिकता की शिक्षा के लिये लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए।” 2 तीमुथियुस 3:16–17 (IRV); “और उसने कुछ को प्रेरित नियुक्त करके, और कुछ को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कुछ को सुसमाचार सुनानेवाले नियुक्त करके, और कुछ को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया। जिससे पवित्र लोग सिद्ध हो जाएँ और सेवा का काम किया जाए, और मसीह की देह उन्नति पाए।” इफिसियों 4:11–12 (IRV); “तुम्हें हर एक भली बात में सिद्ध करे, जिससे तुम उसकी इच्छा पूरी करो, और जो कुछ उसको भाता है, उसे यीशु मसीह के द्वारा हम में पूरा करे...” इब्रानियों 13:21 (IRV)।

57 “...इसलिए कि हम विश्राम और चैन के साथ सारी भक्ति और गरिमा में जीवन बिताएँ। यह हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर को अच्छा लगता और भाता भी है...” 1 तीमुथियुस 2:2–3 (IRV); “इसलिए हे भाइयों, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिलाकर विनती करता हूँ, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ; यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है। और इस संसार के सदृश्य न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।” रोमियों 12:1–2 (IRV); “...इस युग में संयम और धार्मिकता से और भक्ति से जीवन बिताएँ...” तीतुस 2:12 (IRV)।

58 “परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश-अंश करके बदलते जाते हैं।” 2 कुरिन्थियों 3:18 (IRV); “वरन् प्रेम में सच बोलें और सब बातों में उसमें जो सिर है, अर्थात् मसीह में बढ़ते जाएँ...” इफिसियों 4:15 (IRV); “पर हमारे प्रभु, और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जाओ...” 2 पतरस 3:18 (IRV); “परन्तु धर्मियों की चाल, भोर-प्रकाश के समान है, जिसकी चमक दोपहर तक बढ़ती जाती है।” नीतिवचन 4:18 (IRV)।

59 “...यद्यपि हमारा बाहरी मनुष्यत्व नाश भी होता जाता है, तो भी हमारा भीतरी मनुष्यत्व दिन प्रतिदिन नया होता जाता है।” 2 कुरिन्थियों 4:16 (IRV)।

60 “और अपने दास के वचन को पूरा करता और अपने दूतों की युक्ति को सफल करता हूँ...” यशायाह 44:26 (IRV) (यह माँगते हुए कि परमेश्वर उस वचन को पुष्ट और पूरा करें जो उनका दास बोलता है); “मैं तुम से सच कहता हूँ, जो कुछ तुम पृथ्वी पर बाँधोगे, वह स्वर्ग पर बँधेगा ... फिर मैं तुम से कहता हूँ, यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी बात के लिये जिसे वे माँगें, एक मन के हों, तो वह मेरे पिता की ओर से

जो स्वर्ग में है उनके लिये हो जाएगी।" मत्ती 18:18–19 (IRV); "और उन्होंने निकलकर हर जगह प्रचार किया, और प्रभु उनके साथ काम करता रहा और उन चिन्हों के द्वारा जो साथ-साथ होते थे, वचन को दृढ़ करता रहा। आमीन।" मरकुस 16:20 (IRV)।

61 "पौलुस की ओर से जो यीशु मसीह का दास है, और प्रेरित होने के लिये बुलाया गया, और परमेश्वर के उस सुसमाचार के लिये अलग किया गया है..." रोमियों 1:1 (IRV); "क्योंकि हम अपने को नहीं, परन्तु मसीह यीशु को प्रचार करते हैं, कि वह प्रभु है; और उसके विषय में यह कहते हैं, कि हम यीशु के कारण तुम्हारे सेवक हैं।" 2 कुरिन्थियों 4:5 (IRV); "मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुँजियाँ दूँगा: और जो कुछ तू पृथ्वी पर बाँधेगा, वह स्वर्ग में बँधेगा..." मत्ती 16:19 (IRV)।

62 "इसलिए परमेश्वर के अधीन हो जाओ; और शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा।" याकूब 4:7 (IRV); "तुम में से पाँच मनुष्य सौ को और सौ मनुष्य दस हजार को खदेड़ेंगे; और तुम्हारे शत्रु तलवार से तुम्हारे आगे-आगे मारे जाएँगे..." लैव्यव्यवस्था 26:8 (IRV); "यहोवा ऐसा करेगा कि तेरे शत्रु जो तुझ पर चढ़ाई करेंगे वे तुझ से हार जाएँगे; वे एक मार्ग से तुझ पर चढ़ाई करेंगे, परन्तु तेरे सामने से सात मार्ग से होकर भाग जाएँगे।" व्यवस्थाविवरण 28:7 (IRV); "परमेश्वर उठे, उसके शत्रु तितर-बितर हों; और उसके बैरी उसके सामने से भाग जाएँ!" भजन संहिता 68:1 (IRV)।

63 "तुझे विश्वास है कि एक ही परमेश्वर है; तू अच्छा करता है; दुष्टात्मा भी विश्वास रखते, और थरथराते हैं।" याकूब 2:19 (IRV); "उनमें डर और घबराहट समा जाएगा; तेरी बाँह के प्रताप से वे पत्थर के समान अबोल होंगे..." निर्गमन 15:16 (IRV); "...क्या तू समय से पहले हमें दुःख देने यहाँ आया है?" मत्ती 8:29 (IRV) (यह शत्रु में प्रभु के भय का एक उदाहरण है, जो इसलिए अंकित किया गया कि मसीह में विश्वासयोग्य लोग भी उनकी सामर्थ्य पर विश्वास करें)।

64 "क्या तूने उसकी, और उसके घर की, और जो कुछ उसका है उसके चारों ओर बाड़ा नहीं बाँधा?..." अय्यूब 1:10 (IRV) (शैतान परमेश्वर से बात करते हुए और यह स्वीकार करते हुए कि परमेश्वर ने उसे अय्यूब से किसी भी रीति से जुड़ी किसी भी वस्तु को छूने से रोक रखा था, मानो अय्यूब और उससे जुड़ी हर वस्तु के चारों ओर सुरक्षा का, पवित्र आग का, एक बाड़ा रखा गया हो) ("बाड़ा" ठीक वही शब्द है जिसके विषय में पवित्रशास्त्र अंकित करता है कि स्वयं शैतान ने परमेश्वर की दिव्य सुरक्षा का वर्णन करने के लिये उसका प्रयोग किया); "और यहोवा की यह वाणी है, कि मैं आप उसके चारों ओर आग के समान शहरपनाह ठहरूँगा, और उसके बीच में तेजोमय होकर दिखाई दूँगा।'" जकर्याह 2:5 (IRV); "यहोवा के डरवैयों के चारों ओर उसका दूत छावनी किए हुए उनको बचाता है।" भजन संहिता 34:7 (IRV); "क्योंकि वह अपने दूतों को तेरे निमित्त आज्ञा देगा, कि जहाँ कहीं तू जाए वे तेरी रक्षा करें।" भजन संहिता 91:11 (IRV)।

65 "उसके फाटकों में धन्यवाद, और उसके आँगनों में स्तुति करते हुए प्रवेश करो, उसका धन्यवाद करो, और उसके नाम को धन्य कहो!" भजन संहिता 100:4 (IRV); "किसी भी बात की चिन्ता मत करो; परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएँ।" फिलिप्पियों 4:6 (IRV)।

66 "मैं तुम्हें अनाथ न छोड़ूँगा, मैं तुम्हारे पास वापस आता हूँ।" यूहन्ना 14:18 (IRV); "परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लो कि तुम शैतान की युक्तियों के सामने खड़े रह सको।" इफिसियों 6:11 (IRV); "क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं, पर गढ़ों को ढा देने के लिये परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं।" 2 कुरिन्थियों 10:4 (IRV)।

67 "और उद्धार का टोप, और आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का वचन है, ले लो।" इफिसियों 6:17 (IRV)।

68 "क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत तेज है, प्राण, आत्मा को, गाँठ-गाँठ, और गूदे-गूदे को अलग करके, आर-पार छेदता है; और मन की भावनाओं और विचारों को जाँचता है।" इब्रानियों 4:12 (IRV)।

69 "जिसने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिये दे दिया, वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्यों न देगा?" रोमियों 8:32 (IRV); "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" यूहन्ना 3:16 (IRV)।

70 “परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है।” 1 कुरिन्थियों 15:57 (IRV); “परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हम से प्रेम किया है, विजेता से भी बढ़कर हैं।” रोमियों 8:37 (IRV); “क्योंकि जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह संसार पर जय प्राप्त करता है, और वह विजय जिससे संसार पर जय प्राप्त होती है हमारा विश्वास है।” 1 यूहन्ना 5:4 (IRV)।

71 “और उसने प्रधानताओं और अधिकारों को अपने ऊपर से उतार कर उनका खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया और क्रूस के कारण उन पर जय जयकार की ध्वनि सुनाई।” कुलुस्सियों 2:15 (IRV)।

72 “क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लहू और माँस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से, और इस संसार के अंधकार के शासकों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं।” इफिसियों 6:12 (IRV); “...उन अविश्वासियों के लिये, जिनकी बुद्धि इस संसार के ईश्वर ने अंधी कर दी है...” 2 कुरिन्थियों 4:4 (IRV)।

73 “परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएँ।” यशायाह 53:5 (IRV); “हमको मसीह में उसके लहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात् अपराधों की क्षमा, परमेश्वर के उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है...” इफिसियों 1:7 (IRV)।

74 “क्योंकि बैरी होने की दशा में उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ, फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएँगे?” रोमियों 5:10 (IRV); “और उसके क्रूस पर बहे हुए लहू के द्वारा मेल-मिलाप करके, सब वस्तुओं को उसी के द्वारा से अपने साथ मेल कर ले...” कुलुस्सियों 1:20 (IRV)।

75 “धन्य है वह मनुष्य, जो परीक्षा में स्थिर रहता है; क्योंकि वह खरा निकलकर जीवन का वह मुकुट पाएगा, जिसकी प्रतिज्ञा प्रभु ने अपने प्रेम करनेवालों को दी है।” याकूब 1:12 (IRV); “...प्राण देने तक विश्वासयोग्य रह; तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूँगा।” प्रकाशितवाक्य 2:10 (IRV)।

76 “परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा...” यूहन्ना 16:13 (IRV)।

77 “इसी प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो, और अलग-अलग उसके अंग हो।” 1 कुरिन्थियों 12:27 (IRV); “और सब कुछ उसके पाँवों तले कर दिया और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया, यह उसकी देह है, और उसी की परिपूर्णता है, जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है।” इफिसियों 1:22–23 (IRV)।

78 “और मैं भी तुझ से कहता हूँ, कि तू पतरस है, और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊँगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।” मत्ती 16:18 (IRV)।

79 “...हे पिता, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि तूने मेरी सुन ली है।” यूहन्ना 11:41 (IRV) (लाज़र के जिलाए जाने से पहले मसीह धन्यवाद देते हुए); “और हमें उसके सामने जो साहस होता है, वह यह है; कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ माँगते हैं, तो हमारी सुनता है। और जब हम जानते हैं, कि जो कुछ हम माँगते हैं वह हमारी सुनता है, तो यह भी जानते हैं, कि जो कुछ हमने उससे माँगा, वह पाया है।” 1 यूहन्ना 5:14–15 (IRV)।

80 “इसलिए मैं तुम से कहता हूँ, कि जो कुछ तुम प्रार्थना करके माँगो तो विश्वास कर लो कि तुम्हें मिल गया, और तुम्हारे लिये हो जाएगा।” मरकुस 11:24 (IRV); “और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले को विश्वास करना चाहिए, कि वह है; और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है।” इब्रानियों 11:6 (IRV)।

81 “...यदि पिता से कुछ माँगोगे, तो वह मेरे नाम से तुम्हें देगा। अब तक तुम ने मेरे नाम से कुछ नहीं माँगा; माँगो तो पाओगे ताकि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए।” यूहन्ना 16:23–24 (IRV); “वचन से या काम से जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो, और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो।” कुलुस्सियों 3:17 (IRV)।

82 “पर हमारे प्रभु, और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जाओ। उसी की महिमा अब भी हो, और युगानुयुग होती रहे। आमीन।” 2 पतरस 3:18 (IRV)।

83 “क्योंकि परमेश्वर की जितनी प्रतिज्ञाएँ हैं, वे सब उसी में ‘हाँ’ के साथ हैं इसलिए उसके द्वारा आमीन भी हुई, कि हमारे द्वारा परमेश्वर की महिमा हो।” 2 कुरिन्थियों 1:20 (IRV)।

इस पृष्ठ पर हिंदी में उद्धृत सभी बाइबल-वचन इंडियन रिवाइज्ड वर्जन (IRV) हिंदी, 2019 से लिए गए हैं। कॉपीराइट © 2017, 2018, 2019 Bridge Connectivity Solutions; Creative Commons Attribution-ShareAlike 4.0 International (CC BY-SA 4.0) लाइसेंस के अंतर्गत। पाठ: ebible.org/hin2017। वचनों के अंश उद्धृत किए गए हैं; लोप-चिह्न (...) छोड़े गए अंश दर्शाते हैं। बाइबल के पाठ में कोई अन्य परिवर्तन नहीं किया गया है।